

---

# Shri Krishna Ashtakam

---

## श्रीकृष्णाष्टकम्

---

### Document Information

---

Text title : Shri Krishna Ashtakam

File name : shrIkRRiShNASHTakamshrIdharasvAmI2.itx

Category : vishhnu, shrIdharasvAmI, aShTaka, krishna, stotra

Location : doc\_vishhnu

Author : Shridharasvami

Description/comments : shrIdharasvAmI stotraratnAkara

Acknowledge-Permission: Upendra Shripad Dasare, <https://shridharamrut.com>

Latest update : November 8, 2022

Send corrections to : [Sanskrit@cheerful.com](mailto:Sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

November 13, 2022

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीकृष्णाष्टकम्



यद्ब्रह्मनिर्गुणमिति श्रुतयो वदन्ति  
यद्दिव्यभक्तिवशागः स्थिरसौख्यमेति ।  
यस्मिन् स्थिते तु भवमेति पुनर्न कश्चित्  
तत्कृष्णादिव्यपदपङ्कजमाश्रयेहम् ॥ १ ॥

यस्मिन्न जीवजगदादिकबन्धजालं  
ब्रह्मैव यत्स्वमहसैव सदा चकास्ति ।  
यस्मिन् परे सुखघने न विभिन्नमीषत्  
तत्कृष्णादिव्यपदपङ्कजमाश्रयेहम् ॥ २ ॥

कार्यं न कारणमपीति न यस्य किञ्चित्  
स्वानन्दमात्रमिह यत्परिपूर्णमेकम् ।  
माया न तत्सकलकार्यमुदेति यस्मिन्  
तत्कृष्णादिव्यपदपङ्कजमाश्रयेहम् ॥ ३ ॥

यन्नेति नेति वचनैर्निगमा अवोचुः  
नश्येन्न यत्कचिदिहास्य विनाशकत्वात् ।  
यच्छाश्वतं विततमद्वयचित्स्वरूपं  
तत्कृष्णादिव्यपदपङ्कजमाश्रयेहम् ॥ ४ ॥

यस्मिन्न किल्विषमिदं किल देहजातं  
यस्मिंस्तथा न खलु भाति मनःकृतं यत् ।  
यस्मिन्न जन्मगुणकर्मजपाशबन्धः  
तत्कृष्णादिव्यपदपङ्कजमाश्रयेहम् ॥ ५ ॥

ब्रह्माण्डमीदृगथवा न तथैव पिण्डं  
पुंस्त्री तथा च पुरुषः प्रकृतिर्न यत्र ।  
सर्वज्ञ ईश इति यत्र च नैव जीवः  
तत्कृष्णादिव्यपदपङ्कजमाश्रयेहम् ॥ ६ ॥

यन्मङ्गलं परमहोखिलमङ्गलानां

सत्यस्यसत्यमिति यत्प्रथितं च वेदैः ।

यत्सौख्यलेशत इमे त्रिदशाश्च धन्याः

तत्कृष्णादिव्यपदपङ्कजमाश्रयेहम् ॥ ७ ॥

यत्सर्वचेतनमहोऽपि न यत्र सर्वं

स्वेनैव सर्वहृदयेहमिति स्फुटं यत् ।

ज्ञात्वा स्वसौख्यमिति यन्मुनयो विमुक्ताः

तत्कृष्णादिव्यपदपङ्कजमाश्रयेहम् । ८ ॥

त्रैलोक्यपावनी पुण्या मुक्तिदा कृष्णासंस्तुतिः ।

भद्रं तनोतु लोकेषु गङ्गेव किल सर्वदा ॥ ९ ॥

इति श्रीमत् परमहंसपरिव्राजकाचार्य सद्गुरु भगवान्

श्रीधरस्वामीमहाराजविरचितं श्रीकृष्णाष्टकं सम्पूर्णम् ।

रचनाकाळः श्रीकृष्णजन्माष्टमी, संवत्सर- १९४३

रचनास्थळः कॉफी उद्यान, चिक्कमगळूरु

---

*Shri Krishna Ashtakam*

pdf was typeset on November 13, 2022

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

